

पत्रिगर्हिर्हि। गच्छसीदनाम गति यस्मिन्नीवहिमा गम ॥ ॥ नृकृयाकृसमिति विद्विर्मी
थं न्वाय यत्रै खिवानवुदाथै थर्क्या सत्रीद नृमिद्वयकृत्रै यन दावयत्रथै ॥ १
६३ ॥ यस्य गृह मूला योव मातेवहि न कात्रिधो ॥ वदत न स्यामा गति धुक्क यकृय
अगति ॥ नृकृयाकृस श्रीमामस्यैथै ह नृकृयकृत्रै थ्या सत्रीद वृद्धिमानकृत्रै
कृत्रै थकृत्रायावत्त माथै ॥ १६४ ॥ किं याते वृद्धि निःशृणुं आकसनायकात्रकं
वनमकं कलालम्बी यण विधम न कली ॥ ॥ तवर्क्याय दयाव क्काय कं सो सना
य त्रियकृत्रयाव कलसधनय कृत्रयाव कृत्रकाय नै गक कलया विधम
॥ १६५ ॥ नृकाया शान्ति मृग ४ यण ४ वरुर्निदहा धनवर्क्या कन्या कालविधम नृयिः
मविद्वियी ॥ ॥ तिनिर्कृके काय कृत्रै सट्टन उति द्वा साविर्नैलि

...याविकात्रनायमदूवा ॥ १८६ ॥ अथवा बहवः पुरा ॥ अथवा पिगयी
 ॥ अथवा मधुमधन नीलवा दृष्टमस्तु ॥ ॥ कलम कायदल कदा
 ॥ वरु क काय गया वनिवहने थवत मधुमधयदूवा क नीलथ साड लून
 ॥ वरु ॥ १८६ ॥ ॥ कन गुष्ट दृष्ट न दृष्ट मा ल क व द्दिना दृष्ट न दृष्ट न सर्व क
 ॥ यलै व कलै यथा ॥ ॥ गद सिद्ध मा मन त वन समस्त वन त र्य द दृष्ट नै कृष्ट ३
 ॥ काय न कल मा व कि व थ थ ॥ १८७ ॥ ॥ कना पि सु दृष्ट न यथि न न सु गान्धिना
 ॥ वासी तं न दृष्ट नै सर्व सु दृष्ट नै कलै यथा ॥ ॥ क मा सि मा वा द्वा व नै सा कन गु र्य
 ॥ न म व क नै स यलै व कलै त र्य हिन का थ थ ॥ १८८ ॥ ॥ यय पुरा व सा ह या सा यी कृष्ट
 ॥ न ग मिनी विरु द दृष्टि सी कृष्ट स र्ज त सम ही त ल ॥ ॥ व म या काय पति ति विध व

॥ १८९ ॥ यत्र कार्यं यथा कात्मा सकार्यं किं यथा धयगा सह का र्यं निवृत्ति ना जा
 का र्यं वि कु म ॥ ॥ म व या का र्यं स र्ज यै गु ति या र्ज थ व का र्यं स र्ज व ति त्री सा ध न य
 मि गु द्वा र्यं स नि श य या र ना जा का र्यं स व र न या य ॥ १९० ॥ ॥ जल स ख व नी या नौ य
 कृ तं तं न दृष्ट नै न व लै वा पि सा धू नै जिला ल ख व ति कृ ति ॥ ॥ नी व न या द
 का र्यं लै ख स या या थ य म नै स य म द सा धू ज न न या द का र्यं सि व त य म
 दू व ला क स या या थ वा नि व ॥ १९१ ॥ ॥ म दू ता मा य द ३ स नि म दू ता म व स
 य द ३ ॥ ॥ ग त र म नू थ य ना य दाने व सै य द ३ ॥ ॥ त व या ना य द ग व सै य
 द नै त व न व वि वा म नू थ या सै य द म द ना य दी स द ॥ १९२ ॥ ॥ म दू ता म य नि
 म क न व म ॥ ॥ य द व लु मा ॥ ॥ य म त द मा कृ त म दू ता क त र सै य द ३ ॥ ॥

सहस्रदि। ३॥ जनवेदीनलेथ सय। रुद्रायोममदी॥ ॥ सादका वादका
दका वदमसा मयवादी दका बेलो। रुद्रका दान। लदका अदका
मै। यथिवीधननयाने॥ २००॥ नसायपिहिसे सात्र सात्रम मत्ररु हरी।
का। मेवास। सगासै गम गममः ४॥ सै यैऊने॥ ॥ नसात्रसे सात्रन अथका
सात्ररुने कुरु धानसा कागीवास गत्यनय सै नयाय नीम लैय महर
हाद वयुडा याय॥ ॥ नसात्ररुने सै सात्रम॥ ३००॥ ॥ तिदान कुनी मे सा
त्रसै गुरु नीय जात कः समापः॥ ॥ गुरुः समुप ६ १ ४ काहिकि
सुके॥ वउरुसि। वधनाल॥ ७५ मयु। त्या न नि नि नि केन॥ दयका॥
रामि ७८ २२ माय॥ के म॥ यान के मय॥ ४२०॥